

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अयोध्याकाण्डे

॥ त्र्यशीतितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ त्र्यशीतितमः सर्गः ॥

भरतस्य रनयात्रा शृङ्गेरपुरे रात्रिरासश्च

ततः समुत्थितः कल्यामास्थाय स्यन्दनोत्तमम्।
प्रययौ भरतः शीघ्रं रामदर्शनकाम्यया ॥ 2.83.1 ॥

अग्रतः प्रययुस्तस्य सर्वे मन्त्रिपुरोहिताः।
अधिरुह्य हयैर्युक्तान् रथान् सूर्यरथोपमान् ॥ 2.83.2 ॥

नरनागसहस्राणि कल्पितानि यथारिधि।
अन्वयुर्भरतं यान्तमिम्ब्राकुकुलनन्दनम् ॥ 2.83.3 ॥

षष्ठी रथसहस्राणि धन्विनो विरिधायुधाः।
अन्वयुर्भरतं यान्तं राजपुत्रं यशस्विनम् ॥ 2.83.4 ॥

शतं सहस्राण्यश्वानां समारूढानि राघवम्।
अन्वयुर्भरतं यान्तं राजपुत्रं यशस्विनम् ॥ 2.83.5 ॥

कैकेयी च सुमित्रा च कौसल्या च यशस्विनी।
रामानयनसङ्गुष्ठा ययुर्यानेन भास्वता ॥ 2.83.6 ॥

प्रयाताश्चार्यसङ्घाता रामं द्रष्टुं सलम्बणम्।
तस्यैव च कथाश्चित्राः कुर्याणा हृष्टमानसाः ॥ 2.83.7 ॥

মেঘশ্যামং মহাবাহুং স্থিরসত্ত্বং দৃঢ়ব্রতম্।
কদা দ্রক্ষ্যামহে রামং জগতঃ শোকনাশনম্ ॥ 2.83.8 ॥

দৃষ্ট এৱ হি নঃ শোকমপনেষ্যতি রাঘৱঃ।
তমঃ সৱস্য লোকস্য সমুদ্যন্নির ভাস্করঃ ॥ 2.83.9 ॥

ইত্যেৱং কথযন্তস্তে সম্প্রহৃষ্টাঃ কথাঃ শুভাঃ।
পরিষ্ৱজানাশ্চান্যোন্যং যযুর্নাগরিকাস্তদা ॥ 2.83.10 ॥

যে চ তত্রাপরে সৱে সন্মতা যে চ নৈগমাঃ।
রামং প্রতিযযুর্হৃষ্টাঃ সৱাঃ প্রকৃতযঃ শুভাঃ ॥ 2.83.11 ॥

মণিকারাশ্চ যে কেচিৎ কুম্ভকারাশ্চ শোভনাঃ।
সূত্রকর্মরিশেষজ্ঞা যে চ শঙ্কোপজীৱিনঃ ॥ 2.83.12 ॥

মায়ূরকাঃ ত্রাকচিকা রেধকা রোচকাস্তথা।
দন্তকারাঃ সুধাকারা যে চ গঙ্কোপজীৱিনঃ ॥ 2.83.13 ॥

সূৱর্ণকারাঃ প্রখ্যাতাস্তথা কম্বলকারকাঃ।
স্নাপকোষণোদকা রৈদ্যা ধূপকাঃ শৌণ্ডিকাস্তথা ॥ 2.83.14 ॥

রজকাস্তন্নরাযাশ্চ গ্রামঘোষমহত্তরাঃ।
শৈলূষাশ্চ সহ স্ত্রীভিৱ্যাস্তি কৈৱর্তকাস্তথা ॥ 2.83.15 ॥

সমাহিতা রেদরিদো ব্রাহ্মণা বৃত্তসন্মতাঃ।
গোরথৈৰ্ভৱতং যান্তমনুজগুঃ সহস্রশঃ ॥ 2.83.16 ॥

সুৱেষাঃ শুদ্ধৱসনাস্তাম্ৰমৃষ্টানুলেপিনঃ।
সৱে তে ৱিৱিধৈৱ্যানৈঃ শনৈৰ্ভৱতম্ৰযুঃ ॥ 2.83.17 ॥

প্রহৃষ্টমুদিতা সেনা সান্ৱযাৎ কৈকযীসুতম্।
ভ্রাতুরানযনে যাতং ভৱতং ভ্রাতূৱৎসলম্ ॥ 2.83.18 ॥

তে গংরা দূরমধ্বানং রথযানাশ্বকুঞ্জরৈঃ।
সমাসেদুস্ততো গঙ্গাং শৃঙ্গরেরপুরং প্রতি ॥ 2.83.19 ॥

যত্র রামসখা রীরো গুহো জ্ঞাতিগণৈর্ভূতঃ।
নিরসত্যপ্রমাদেন দেশং তং পরিপালযন্ ॥ 2.83.20 ॥

উপেত্য তীরং গঙ্গায়াশ্চক্ররাকৈরলঙ্কৃতম্।
র্যরতিষ্ঠত সা সেনা ভরতস্যানুযাযিনী ॥ 2.83.21 ॥

নিরীক্ষ্যানুখিতাং সেনাং তাং চ গঙ্গাং শিরোদকাম্।
ভরতঃ সচিরান্ সর্দানব্রবীদ্ রাক্যকোরিদঃ ॥ 2.83.22 ॥

নিরেশযত মে সৈন্যমভিপ্রাযেণ সর্ভতঃ।
রিপ্রান্তাঃ প্রতরিষ্যামঃ শ্ব ইমাং সাগরঙ্গমাম্ ॥ 2.83.23 ॥

দাতুং চ তারদিচ্ছামি স্বর্গতস্য মহীপতেঃ।
ঔর্ধ্বদেহনিমিত্তার্থমরতীর্যোদকং নদীম্ ॥ 2.83.24 ॥

তস্যৈরং ব্রুরতোহমাত্যাস্তথেতুকল্পা সমাহিতাঃ।
ন্যরেশযংস্তাংশ্চন্দেন স্নেন স্নেন পৃথক্ পৃথক্ ॥ 2.83.25 ॥

নিরেশ্য গঙ্গামনু তাং মহানদীং
চমুং রিধানৈঃ পরিবর্হশোভিনীম্।
উরাস রামস্য তদা মহান্ননো
রিচিন্তমানো ভরতো নিরর্তনম্ ॥ 2.83.26 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে
অযোধ্যাকাণ্ডে ত্র্যশীতিতমঃ সর্গঃ ॥